आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2517 • उदयपुर, सोमवार 15 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

फिर जुड़ेंगे... बिखरे सपने

अनिल की जिंदगी में सबकुछ ठीक चल रहा था कि एक हादसे ने उसके सारे सपने बिखेर दिए। वह निर्माण कार्यो पर वेलदारी करके अपने वृद्ध पिता को परिवार पालन में मदद करता था। कभी–कभी कुदरत किसी के साथ ऐसा कर जाती है कि व्यक्ति टूट जाता है।

राजगढ़ (मध्यप्रदेश) निवासी किसान शिवनारायण वर्मा के पुत्र अनिल (23) के साथ ऐसा ही हुआ। एक साल पहले तक वह मजदूरी करते हुए जल्दी ही अपना घर–संसार बसाने का सपना देख रहा था।

एक दिन अपने कार्यस्थल पर काम करते हुए अचानक करंट लगा और वो बेसुध होकर गिर पड़ा वहां मौजूद लोग व उनका भाई तत्काल निकटवर्ती जावरा के सिविल हॉस्पीटल लेकर पहुंचे। प्राथमिक उपचार के बाद हादसे की गंभीरता को देखते हुए उन्हें भोपाल के बड़े अस्पताल के लिए रैफर किया गया। जहां करीब दो महीने तक इलाज चला लेकिन दोनों हाथ और एक पैर को काटकर ही जिंदगी को बचाया जा सका।

यह स्थिति अनिल व उसके परिवार के लिए अत्यंत दुःखदायी थी। आत्मनिर्भर अनिल अब दूसरों के सहारे था। आंखों से हरदम आंसू टपकते थे। भविष्य अंधकार में था। इलाज के बाद घर लौटने पर पिता और माँ नवरंग बाई कितना ही दिलासा देते किंतु अनिल की आंखे शून्य में ही खोई रहती थी। करीब 10–11 महीने बाद वर्मा परिवार के किसी परिचित ने अनिल को कृत्रिम हाथ–पैर लगवाने की सलाह दी।

किंतु गरीबी आड़े आ रही थी। उसी व्यक्ति ने एक दिन फिर उसे अपनी बात याद दिलाते हुए उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान जाने के लिए कहा। जहां निःशुल्क आधुनिक तकनीक पर आधारित कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं। अनिल अपने पिता के साथ 30 सितंबर को उदयपुर आए जहां करीब एक सप्ताह के आवास के दौरान उनके कृत्रिम अंग लगाए गए। जिनके सहारे अब वे उठते–बैठते और धीरे–धीरे चलते भी हैं। अनिल ने संस्थान से लौटते हुए कहा कि 'वह अपने बिखरे हुए सपनों को फिर से जोड़ने की कोशिश तो करेगा ही बुजुर्ग मां–बाप का सहारा भी बनेगा।

टीना थामेगी अब कलम

भोपाल(मध्यप्रदेश) के सूखी सेवनिया कस्बे को टीना(5) अब अन्य बच्चों की तरह अपने हाथ में भी पकड़ सकेगी कलम और लिखेगी अपने सुखद भविष्य की इबारत। इस बालिका के जन्म से ही दांए हाथ का पंजा (हथेली) विकसित नही हुई थी। सिर्फ कलाई पर नन्हीं–नन्हीं उंगलियां थी। माता–पिता अनीता व बबलू कुशवाह बच्ची की इस जन्मजात कमी से काफी दुःखी थे। जनवरी 2021 में भोपाल में संस्थान की ओर से . त्रिम अंग(हाथ–पैर) माप शिविर भोपाल उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। जिसमें माता–पिता टीना को लेकर गए जहां उसके लिए कोहनी तक . त्रिम हाथ बनाने का माप लिया गया। 6 माह बाद 25 जून 2021 को यह हाथ टीना को लगा दिया गया। हाथ लगाने के साथ ही संस्थान में उसकी माता को इस बात का प्रशिक्षण भी दिया गया कि हाथ का संचालन और रख–रखाव किस प्रकार होगा। टीना और माता–पिता अब बेहद खुश हैं। टीना कहती है कि अब वह खुशी–खुशी स्कूल जाएगी और खूब लिख–पढ़ कर जिंदगी के लम्बे सफर को सुखद बनाएगी।

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बड़े अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दास्तान है बिहार के पश्चिमी चमपारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस का हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर, 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

झूठ नहीं बोलता आईना

मनुष्य के पास भौतिकसुख–सुविधाएं कितनी भी हो, अन्त समय में उनका कोई मूल्य नहीं रह पाता। मृत्यु के आगे सभी बेबस हैं। इसलिए जीवन को सार्थक करने के लिए धन का मोह न कर सेवा के पथ को अंगीकार करना चाहिए।

एक साहूकार के पास पर्याप्त धन होते हुए भी वह दिन–रात येन–केन–प्रकारेण धन की जुगाड़ मे रहता था। उसे इस बात का अंहकार भी था कि वह धन कमाने में बहुत ही चतुर है।

इतने धन के बावजूद वह किसी दुःखी या गरीब की मदद करने का विचार मन में नहीं लाता था। जो भी याचक उसके घर आता, वह झिड़ककर भगा देता था। धन की लालसा में एक दिन उसने एक महात्मा जी को भोजन पर आमंत्रित किया और उनसे व्यापार में वृद्धि का आशीर्वाद मांगा। महात्मा जी को लौटते वक्त उसने एक आईना दिया और कहा कि यह उस व्यक्ति को दे दें, जो उन्हें सबसे ज्यादा मूर्ख लगे।

लम्बे समय बाद घूमते हुए महात्मा जी एक दिन फिर साहूकार के शहर में आए। वे साहूकार के घर गए देखा कि वह मृत्युशैया पर लेटा है। साहूकार ने उससे हाथ जोड़कर कहा, 'महाराज क्या कोई ऐसी विद्या है जिससे मेरे प्राण बच सकें ?' महात्मा जी ने ऐसी किसी भी

विद्या से इनकार किया। उन्होंने कहा, 'तुम जिन्दगीभर धन कमाने में लगे रहे,कोशिश करो कि वह तुम्हारे प्राण बचा सके।' साहूकार ने कहा, 'यह मैं कर चूका हूं, लेकिन लाभ नहीं हुआ।' तब महात्मा जीने अपने झोले से वही आईना उसे दिखाया जो उसने दिया था। महात्मा जी बोले, 'मुझे अभी तक कोई मूर्ख नहीं मिला लेकिन तुम सबसे बड़े मूर्ख हो जिसने धन से मृत्यु को खरीदना चाहा। इसलिए इस आईने के पात्र केवल तुम हो।'

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये कलाकंद है ना बणाकर के कलाकंद मिठाई लेने जाओगे तो, एक किलो कलाकंद दो। ये भगवान कलाकंद अन्दर रख दिया रेडीमेड। और विदुर पत्नी ने ये ही केले के छिलके जीमाती गई। भगवान ने कहा – भाभी बहुत भूख लगी। सुनते थे ना–

दुर्योधन के मेवा त्यागे।
साग विदुर घर खाये।।

भाभी, विदुर पत्नी प्रेम में इतनी प्रेम में विभोर हो गई। प्रेम में विह्वल हो गई। मेरे घर पर ठाकुर आये, मेरे घर पर सांवरिया आया। मेरे घर पर द्वारकाधीश आये, मेरे घर पर कान्हा आया। कहाँ बिठाऊ, कहाँ बिठाऊ? पहले तो भौंचक्की रह गई। कृष्ण भगवान ने कहा– भाभी, मैं बैठना चाहता हूँ। तो उल्टे पट्टिये पे बैठा दिया। पर भूख लग रही है केले के छिलके खिलाती गई। जीमो म्हारा ठाकुर। कर्माबाई कई थारे काकी लागे। हाँ, नरसी मेहता के मायरे में बहुत सुनते हो आप। भगवान तो भाव का भूखा है लाला।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा– कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

मानवता एक सद्गुण है जो हरेक मानव में अपेक्षित है। मानवता के मानदण्डों में किसे–किसे रखा जाय यह निर्विवाद है। मानव का एक गुण है परोपकार। जो केवल अपने लिये सोचे वह पशु कहा गया है और जो सर्वहित में सोचे वह मानव। यह स्व और परहित क्या है? यहाँ यह भी सोचना आवश्यक है कि स्वहित और परहित कोई विरोधी भाव नहीं है। पर जो स्वहित में ही लीन रहता है वह सीमति हो जाता है जबकि परहित वाला परार्थ तो साध ही लेता है पर साथ–साथ स्वहित भी सध जाता है। औरों के लिये कुछ करेंगे तो मन की निर्मलता प्रकट होगी। त्याग का भाव उत्पन्न होगा तथा स्व को परिधि व पर को केन्द्र में रखने का स्वभाव बनेगा। यही स्वभाव मानवता को सिद्ध करता है। मानव के लिये मानवता एक अनिवार्य विशेषता है, यदि मानवता ही नहीं तो कैसा मानव?

कुछ काव्यमय

मानवीय गुणों का संचय,
मानवता का पालन।
मानव कल्याण का भाव
और मानव–मन संचालन।
ये भले कठिन हो
पर अनिवार्य है।
इनके बिना मानव
किसे स्वीकार्य हैं ?

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मन को पालतू बनायें

सुमित्राजी ने कहा– पिताश्री बहुत व्याकुल है– प्रभु। पिताश्री बार–बार कहते हैं– राम को बुला दो, मेरे लक्ष्मण को बुला दो, मेरी सीता को बुला दो, मेरी कौशल्या को बुला दो। राम भगवान ने पिताजी को जाकर प्रणाम किया। ऐसे राजा जो चक्रवर्ती सम्राट् थे। ऐसे राजा जो विदेहराज, राजा जनकजी जिनके चरणों में बार–बार नमन् करते थे।

ऐसे चक्रवर्ती सम्राट, अग्नि देवता स्वयं प्रकट होकर के, अग्नि देवता ने कहा– राजन् तुम धन्य हो। खीर का दान दिया था, ऐसे दशरथजी व्याकुल हो रहे है। कभी–कभी मन में आता है, हम भी कई बार व्याकुल हो जाते हैं। बेचैनी बढ़ जाती है। कहते हैं– आज तो मेरा मूड ठीक नहीं है।

आज मेरे से बात मत करो। बात–बात पर मेरे को चिड़चिड़ाहट हो रही है, ये मन का व्याकुल होना। मन का व्याकुल होना कैसे रूके? उसके लिये जंगली मन को पालतू बनाना होगा। जंगली मन पालतू हो जाता है, पालतू अभी हुआ नहीं है। ये रामायण पालतू बना देगी। ये रामचरितमानस की कथा, महाभारत की कथा।

ये कृष्ण भगवान के दुपट्टे की कथा। रात को पाण्डवों को जिस तरह

राक्षस ने घायल कर दिया था। उसको वरदान था, तुम क्रोध करते गये, वो बड़ा होता गया। मेरे को मालूम था, मैं हंसता गया वो छोटा होता गया। मैंने मच्छर जैसा होने पर उसे बांध दिया। ये कृष्ण कथा, राम कथा, ये नरसी मेहता की कथा आपके– हमारे लिये ऋषियों ने महर्षियों ने रिसर्च करने वाले ऋषियों ने इसीलिये लिखी। आपका– हमारा मन पालतू हो जावे। आपका– हमारा मन दिव्यांगों की सेवा में लगने लग जावे। आपका मन और हमारे को जब भी नरसी मेहता की, हुण्डी स्वीकारो म्हारा सावरियां सेठ। बार–बार आवे, हमारे सांसों की हुण्डी भगवान सावरियां सेठ रोज स्वीकार कर रहे है।

गीत–

म्हारी हुण्डी स्वीकारो.....।
..... सावरा गिरधारी।

ये आम का फल इसलिये लगा, एक बीज बोया था। आज बगीचे में एक महानुभाव बोल रहे थे कि– हमारे यहाँ ऐसा आम था हमारे पिताजी के पास। पाँच– पाँच हजार आम के फल एक वृक्ष पर आते थे।

मतलब आम का ऐसा वृक्ष और केरियाँ ऐसी लूमलूमा कर डालियाँ ऐसी झुक जाती थी कि हम हाथ से तोड़ लेवें। दो–दो हजार, किसी ने कहा– पाँच हजार फल भी आते थे एक वृक्ष पे। एक बीज बोया। आज आप और हम धन्य–धन्य हो जायेंगे। रामकथा, कृष्ण कथा में। धन्य–धन्य हो जायेंगे भगवान के इस कार्य में, कथा में। जब हमारे मन को पालतू बना लेंगे। पालतू मन, बड़ा शक्तिशाली मन होता है। पालतू मन रिसर्च करता है, पालतू मन उपयोगी होता है। पालतू मन, मन के जीते जीत सदा वाला होता है। पालतू मन परिवर्तन से क्या घबराने वाला होता है? पालतू मन अन्तर्मन में सद्भावों की पावन गंगा बहाने वाला होता है। पालतू मन कहता है–

यह भी अच्छा वह भी अच्छा,
अच्छा–अच्छा सब मिल जावे।
जो जैसा है उसको वैसा,
मिल जाता है मंत्र मान लें।।

–कैलाश 'मानव'

रत्न और प्रयत्न

संसार में अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करने की बजाय माँगना शुरू कर देते हैं। माँगकर जीवन एक–दो या तीन दिन चलाया जा सकता है, ताउम्र नहीं। देने वाले किसी माँगने वाले को एक–दो दिन देकर उसका भरण–पोषण कर देते हैं, बाकी के दिनों का क्या? इसी प्रश्न का उत्तर खोजती एक कहानी– सुदूर किसी क्षेत्र में समुद्र के किनारे एक गाँव था। उस गाँव में रत्न और प्रयत्न नाम के

दो भाई एक छोटी–सी झोंपड़ी में रहते थे। दोनों ही भाई अत्यन्त दयालु प्रवृत्ति के थे और मछलियाँ पकड़कर अपना गुजारा करते थे। एक दिन उनके द्वार पर एक भिखारी आया और भीख माँगने हेतु दरवाजा खटखटाया। रत्न ने दरवाजा खोला और उसने जो मछलियाँ पकड़ी थीं, उनमें से कुछ मछलियाँ भिखारी को दे दीं। भिखारी वहाँ से चला गया।

भिखारी के लिए उस दिन के भोजन की व्यवस्था उन मछलियों से हो गई थी। तीन दिन पश्चात् उसी भिखारी ने पुनः रत्न–प्रयत्न के घर के द्वार को खटखटाया, परंतु इस बार प्रयत्न ने द्वार खोला। प्रयत्न ने देखा कि वह भिखारी अत्यन्त भूखा था और उसकी हालत अत्यन्त दयनीय थी। प्रयत्न ने अपना मछली पकड़ने का काँटा व अन्य औजार लिए तथा उस भिखारी को साथ लेकर समुद्र किनारे जा पहुँचा।

प्रयत्न ने उस भिखारी को वहाँ पर अथक एवं अनवरत प्रयासों के पश्चात् मछली पकड़ना सिखा दिया। प्रयत्न ने उस भिखारी को अपने स्वयं के मछली पकड़ने के औजार दे दिए। भिखारी मछली पकड़ने में निपुण हो गया था। प्रयत्न अब अपने घर आ गया।

10–15 वर्षों पश्चात् गाँव में यह खबर फैल गई कि गाँव में एक बहुत धनाढ्य व्यक्ति आ रहा है। उस धनाढ्य व्यक्ति के आतिथ्य सत्कार के लिए गाँव में अनेक तरह से तैयारियाँ होने लगीं।

वह धनाढ्य व्यक्ति गाँव में आया और आकर उसने किसी से पूछा– मुझे रत्न और प्रयत्न से मिलना है, वे कहाँ मिलेंगे?

रत्न और प्रयत्न जब उस धनाढ्य व्यक्ति के पास गए तो उस व्यक्ति ने दोनों भाइयों से पूछा–क्या आपने मुझे पहचाना? दोनों भाइयों ने उत्तर दिया–नहीं।

धनाढ्य व्यक्ति बोला– मैं वही भिखारी हूँ, जिसके पास खाने का दाना नहीं था और जो तुम्हारे घर भिक्षा माँगने आता था। रत्न ने मुझे कुछ मछलियाँ दीं थीं और प्रयत्न ने मुझे मछलियाँ पकड़ना सिखाया था। ऐसा कहकर उसने बहुत–सी स्वर्ण मुद्राएँ प्रयत्न को भेंट स्वरूप दे दीं।

यह देखकर रत्न नाराज हो गया और उसने उस धनाढ्य व्यक्ति से कहा–मैंने भी तो तुम्हारी सहायता की थी और तुम्हारी भूख को मिटाया था। इस पर उस धनाढ्य व्यक्ति ने अपने गले में से एक छोटी–सी स्वर्ण चैन रत्न को दे दी।

रत्न यह सारा माजरा समझ नहीं पाया और पुनः उस धनाढ्य व्यक्ति से प्रश्न पूछा– प्रयत्न को तो इतना कुछ दे दिया और मुझे बस एक छोटी–सी चैन, ऐसा क्यों?

इस पर धनाढ्य व्यक्ति ने उत्तर दिया–तुमने मुझे जो मछलियाँ दीं थीं, उनसे एक दिन की ही भोजन व्यवस्था हो पाई थी, लेकिन प्रयत्न ने मेरी जो सहायता की थी और मुझे जो हुनर सिखाया था, उससे मेरे जीवनभर की भोजन व्यवस्था हो गई थी। किसी गरीब को रोटी देने की अपेक्षा उसे रोटी कमाने लायक बनाना अधिक अच्छा और परोपकारी कार्य है। इससे उसके एक दिन ही नहीं, अपितु आजीवन निर्वाह की व्यवस्था हो जाती है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

15 दिन तक बच्चे मुम्बई के उस अस्पताल में बंधक रहे। चैनराज व कैलाश ने जैसे तैसे 5 लाख रु. जुटाये, फिर भी एक लाख रु. कम पड़ रहे थे। अब कोई चारा भी नहीं था, डॉक्टर को 5 लाख रु. देते हुए कहा कि इतने ही पैसे इकट्ठे हुए हैं, बच्चों को छोड़ना हो तो छोड़ो वरना खुद ही इन्हें पालो। डॉक्टर भी इन 15 दिनों में परेशान हो चुका था। उसने 5 लाख रु. लिये और बच्चों को मुक्त किया। बच्चों के हर्ष का पारावार नहीं था, उन्हें तो मानों एक नई जिन्दगी मिल गई थी। सभी को वापस उदयपुर लाए तो उन्हें चलता फिरता देख संस्था से जुड़े सभी लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

उदयपुर में वापस शिविरों का सिलसिला चालू हो गया। चार कमरे बनने के बाद ज्यूं ज्यूं पैसे आते गये और कमरे बनते गये। अब तक दस कमरे बन चुके थे। इनमें 100 बच्चे रखने लगे। एक बार कैलाश, चैनराज के साथ उनकी कार में जोधपुर जा रहा था कि पीछे से किसी मोटर साईकिल वाले ने आवाज दी –बाबूजी! बाबूजी! रुकिये। गाड़ी रोकी तो मोटर साईकिल सवार ने पास आकर नमस्कार किया और पूछा–आपने मुझे पहचाना कि नहीं? उसकी मोटर साईकिल पर दूध की टंकियां बंधी हुई थी। न तो कैलाश और न ही चैनराज उसे पहचान पाये।

उस युवक ने हाथ जोड़कर इन्हें प्रणाम कहते हुए परिचय दिया – बाबूजी मैं बोम्बे नम्बर 2 हूं। उसके इतना कहते ही कैलाश उसे पहचान गया। मुम्बई में जिन बच्चों का ऑपरेशन कराने ले गये थे उन्हीं में से यह था। तब सभी बच्चों को नम्बर दे दिये थे इसीलिये यह अपने आपको बोम्बे नं. 2 बता रहा था। उसने कहा–बाबूजी! देखिये, मैं अब चलने लगा हूँ, मोटर साईकिल चला लेता हूँ, दूध बेच कर रोजाना 200–250 रु. कमा लेता हूँ। सब आपकी कृपा से संभव हुआ। उसे देखकर कैलाश भावविह्वल हो उठा, उसे याद आ गया कि ऑपरेशन के पहले किस तरह अपने चारों–पैरों के बल पशु की तरह चलता था। चैनराज भी इसे देख फूले नहीं समा रहे थे।

अंश - 158

शिशु के हृदय विकार

छोटे बच्चों की इम्युनिटी कमजोर होने से उनमें संक्रमण की आशंका अधिक होती है। कई बार बीमारियां जन्मजात भी होती हैं। ऐसी ही एक बीमारी है नवजात बच्चों के हृदय में खराबी। इसे कंजेनाइटल हार्ट डिजीज कहते हैं। इसमें हृदय में छेद या फिर नाड़ियां उल्टी दिशा में जुड़ी होती है। यह स्थिति कई बार गंभीर हो जाती है। लक्षण पता हों तो इसकी जल्द पहचान हो जाती है।

हृदय विकार के कई कारण हो सकते हैं

आनुवांशिक कारणों से जन्मजात हृदय रोगों की आशंका ज्यादा रहती है। अगर माता–पिता में यह बीमारी पहले रही है तो बच्चे में भी आशंका रहती है।

इन लक्षणों की अनदेखी न करें

बच्चे में बार–बार संक्रमण होना जैसे कुछ दिनों के अंतराल पर सर्दी–जुकाम, बुखार–निमोनिया की समस्या होना, बच्चे का दूध पीते समय थक जाना और दूध बीच में छोड़ देना, माथे पर पसीना अधिक आना और सुस्त रहना, जब बच्चा रोता या चलता है तो शरीर का नीला पड़ जाना आदि भी शिशु में जन्मजात हृदय रोगों के लक्षण हो सकते हैं।

दवा–सर्जरी से इलाज

ऐसे बच्चों को इलाज दवाओं और सर्जरी दोनों तरह से किया जाता है। अगर बीमारी का पहचान शुरूआत शुरूआती अवस्था में हो जाए तो दवाओं से ही ठीक होती है जबकि देरी से सर्जरी की जरूरत पड़ती है। सर्जरी, दूरबीन विधि और ओपन हार्ट विधि से भी की जाती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

उन दिनों मेरा परिचय आदरणीय बृजनारायण जी तिलक से हो गया। उनकी स्टेशन से चित्तौड़गढ़ रोड पर टायर के पंक्चर बनाने की दुकान थी। वे सोशलिस्ट पार्टी से ताल्लुक रखते थे। यद्यपि मेरी दलगत राजनीति में कोई रुचि नहीं है पर अच्छे लोगों से मिलना व मैत्री रखना मुझे सुहाता है। अतः बृजमोहन जी 'तिलक' मेरे मित्र बन गये। उन दिनों सोशलिस्ट पार्टी का भारत में अच्छा नाम था। श्री राममनोहरजी लोहिया जैसे यशस्वी नेता इस पार्टी के कर्णधार थे। श्री लोहिया जी का जीवन सादा व समाजवादी स्वभाव का था पर वक्ता बहुत ओजस्वी थे। स्वयं प्रधानमंत्री पंजवाहरलाल जी नेहरू भी उनका पूरा सम्मान करते थे। वे जब संसद में अपनी बात रखते थे तो क्या समर्थक और क्या विरोधी, सभी उत्सुकता से उन्हें सुनते थे। वे हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। उस समय संसद में कैसे–कैसे नेता थे, उनके नाम मुझे आज भी श्रद्धापूर्वक याद है– श्री मधु लिमयेजी, श्री राजनारायणजी, श्री अटलबिहारी वाजपेयीजी, राजमाता गायत्री देवीजी, राजमाता सिंधियाजी और ऐसे ही दर्जनों जननेता। एक बार मेरे पूज्य बापूजी भीलवाड़ा पधारे। उनकी एक विलक्षण शैली थी कि वे कथा–प्रसंगों के माध्यम से ऐसी–ऐसी बातें कह देते थे कि वह जीवन का अंग हो जाती थीं। वे जब आते तो मेरे मन में ये पंक्तियां उभर आती थीं –

प्रभु की कृपा भयो सब काजु।
जनम हमार सफल भयो आजु।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 285 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023